This question paper contains 4+2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4434**

Unique Paper Code : **213457** **C**

Name of the Paper : **Sanskrit and Culture**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Sanskrit Language**
(Admission of 2011 and onwards)

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

Note :—Unless otherwise required in a question answers should be written in Sanskrit *or* in Hindi *or* in English.

टिप्पणी :—अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत **या** हिन्दी **या** अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए।

Answer *All* questions.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 5

Explain the following :

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस् तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु ॥

P.T.O.

अथवा

(Or)

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

समानुमस्तु वो मनो यथा वः सुहासति ॥

2. गायत्री मन्त्र तथा उसके महत्व पर एक लघु निबन्ध लिखिए। 5

Write a short essay on गायत्री मन्त्र and its importance.

3. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 5

Explain the following :

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।

यस्मान्न ऋते किञ्च न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

अथवा

(Or)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।

हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

4. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 5

Explain the following :

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँसमाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

अथवा

(Or)

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥

5. ईशावास्योपनिषद् का सार अपने शब्दों में लिखिए : 5

Present the summary of ईशावास्योपनिषद् in your own words.

अथवा

(Or)

ईशावास्योपनिषद् के आधार पर 'ईश्वर' पर एक लघु निबन्ध लिखिए।

Write a short essay on 'ईश्वर' based on ईशावास्योपनिषद्.

6. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 5

Explain the following :

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकँ सुचरितानि। तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि। ये के चास्मच्छ्रेयाँसो ब्राह्मणाः। तेषां त्वयाऽऽसनेन प्रश्वसितव्यम्।

अथवा

(Or)

अथाभ्याख्यातेषु। ते तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एष वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम्।

7. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 6

Explain the following :

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।

कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमाम्॥

अथवा

(Or)

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।

तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

8. वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना किस प्रकार हुई ? 5

How did वाल्मीकि get inspiration to write रामायण ?

9. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 6

Explain the following :

ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविर आयति।

प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते॥

अथवा

(Or)

अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मतः क्षत्रमश्मनो लोहमुत्थितम्।

तेषां सर्वत्रगं तेजः स्वासु योनिषु शाम्यति।

10. विदुरनीति के अनुसार राजा के कर्तव्यों का विवेचन कीजिए। 5

Define the duties of king according to विदुरनीति.

अथवा

(*Or*)

विदुर के अनुसार भिक्षुक कौन है ?

Who is भिक्षुक according to विदुर ?

11. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 6

Explain the following :

नवयोजनसाहस्रो विस्तारोऽस्य महामुने।

कर्मभूमिरियं स्वर्गमपवर्गं च गच्छताम्॥

अथवा

(*Or*)

कर्माण्यसङ्कल्पिततत्फलानि

संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते।

अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते

तस्मिल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति॥

12. विष्णुपुराण में भारतवर्ष की क्या विशेषताएँ बतायी गयी हैं ? 5

What qualities of भारतवर्ष are described in the विष्णुपुराण ?

अथवा

(Or)

विष्णुपुराण में वर्णित जम्बूद्वीप के निवासियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Present a brief sketch of the people of जम्बूद्वीप as described in the विष्णुपुराण.

13. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 6

Explain the following :

सम्पूज्य वरुणं विष्णुं पर्जन्य तत्समाचरेत्।

अरिष्टाशोकपुंनागशिरीषाः सप्रियंगवः॥

अथवा

(Or)

वृक्षायुर्वेदमाख्यास्ये प्लक्षश्चोत्तरतः शुभः।

प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्र आप्येऽश्वत्थः क्रमेण तु॥

14. अग्निपुराण के अनुसार जलाशय का निर्माण किस प्रकार किया जाना चाहिए ? 6

How ponds should be constructed as described in अग्निपुराण ?